51

होने-वाले चेले

लूका 9:57-62; देखें मत्ती 8:19-22, एक निकट दृष्टि

क्या आपको कभी कोई बड़ी वस्तु खरीदने पर लिखित में पैसे वापस मिलने की गारंटी मिली है? बाद में जब वह चीज़ वैसे नहीं चली, जैसे दुकानदार ने बताया था, तो आपने अपने पैसे वापस मांगे। आपसे कहा गया, ''नहीं, नहीं गारन्टी में यह बात शामिल नहीं थी। *पहले आप गारन्टी कार्ड पढ़कर देखें।*''[1] मनुष्य ऐसा लिख सकते हैं, परन्तु मसीह नहीं। जब उसने मनुष्यों को चेला बनने के लिए बुलाया, तो उसने उन्हें बिल्कुल वही बातें बताईं, जिनकी वह मांग करता है और जिनकी उन्हें उम्मीद करनी चाहिए थी।

इस पाठ के पदों से अधिक स्पष्ट और कहीं नहीं मिलता। यीशु यरूशलेम के मार्ग में था (लूका 9:51)। वहां सताव तथा पेशियां और अन्त में मृत्यु उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे (लूका 9:44)। जब वह ''मार्ग में चला जाता था'' (लूका 9:57) तो उसकी भेंट होने-वाले तीन चेलों से हुई। उन्हें उसकी चुनौती से कोई संदेह न रहा कि वह कैसी प्रतिबद्धता चाहता था।

उन लोगों से कहे गए यीशु के शब्द पढ़कर, हो सकता है कि आपको उसकी बातें कठोर लगें। कई तथ्यों को ध्यान में रखना आवश्यक है। (1) हम में से अधिकतर लोग उस समय के रीति-रिवाजों के बारे में नहीं जानते हैं। उन रीति-रिवाजों को जानने से उनकी विनतियों और यीशु के उत्तर के बारे में हमारे विचार कुछ बदल सकते हैं। (2) प्रभु मनों और हृदयों को पढ़ सकता था (मत्ती 9:4; 12:25; लूका 5:20, 22; 6:8; यूहन्ना 1:47; 2:25; 21:17ग)। किसी व्यक्ति की विनती तर्कसंगत लगने पर भी, यीशु को पता होता था कि *वास्तव में* उस व्यक्ति के मन में क्या है। (3) मसीह *युद्ध* में जा रहा था। उसके पास कमज़ोर दिल वाले सिपाही भर्ती करने का समय नहीं था। (4) यीशु ने इन लोगों से कोई ऐसी मांग नहीं की, जिसकी वह अपने आप से मांग न करता हो। अपने अध्ययन में, मेरा काम मांगों को नरम किए बिना कठोरता का तीखापन दूर करना है। उस समय भी और आज भी मसीह पूर्ण प्रतिबद्धता की मांग करता है।

हमारी मुख्य आयतें लूका 9:57-62 होंगी। मत्ती 8:19-22 में ऐसी ही एक घटना मिलती है। दोनों में अवसर समान रहे हों या नहीं, हम नहीं जानते,[2] परन्तु आयतें इतनी मिलती-जुलती हैं कि दोनों कहानियों का इकट्ठे अध्ययन करना लाभदायक होगा।

होने-वाले चेले उस समय

आवेगशील उम्मीदवार (लूका 9:57, 58; देखें मत्ती 8:19, 20)

होने-वाले आरम्भिक चेले ने यीशु से कहा, ''जहां-जहां तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूंगा'' (लूका 9:57ख)। चेला बनने की यीशु की बुलाहट स्पष्टतया ''मेरे पीछे हो ले'' ही थी (देखें लूका 9:59; मत्ती 4:19; 9:9; 10:38; 16:24; 19:21)। उस चुनौती का उत्तर इस व्यक्ति ने दिया कि ''मैं तेरे पीछे हो *लूंगा*।'' इसके अलावा उसने इस बात की कोई सीमा नहीं बांधी कि वह कहां तक जाएगा: '' *जहां-जहां* तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूंगा।''[3] ऐसी प्रतिबद्धता में त्रुटि निकालना कठिन होगा। यदि मत्ती 8 अध्याय में यही घटना बताई गई है तो यह आदमी एक शास्त्री था (आयत 19)। अधिकतर शास्त्री मसीह के विरोधी ही थे (मत्ती 9:3; 12:38; 15:1, 2; 16:21)। शत्रु के खेमे में से किसी को चेलों के साथ लाने की पेशकश रोमांचपूर्ण होगी।

परन्तु यीशु ने उस व्यक्ति के मन में देखा, तो पाया कि उस आदमी को उसकी बात पूरी तरह समझ नहीं आई थी। उसने स्पष्टतया भीड़, आश्चर्यकर्म और जोश को देखा, जबकि मसीह उससे अपने आप का इनकार करना, बलिदान और कष्ट उठाने को तैयार होना चाहता था। वह उस आदमी की तरह था, जो सेना की वर्दी, परेड तमगे को देखकर उसमें शामिल होने की इच्छा करता है, पर उसमें पाए जाने वाले अनुशासन, खतरे या मौत के बारे में नहीं जानता।

प्रभु ने उस व्यक्ति की पेशकश को न तो माना और न ही ठुकराया, बल्कि उसने ध्यान दिलाया कि यदि वह उसके पीछे चले तो उसे क्या अपेक्षा करनी चाहिए थी: ''लोमड़ियों[4] के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं,[5] पर मनुष्य के पुत्र[6] को सिर धरने की भी जगह नहीं''[7] (लूका 9:58; देखें मत्ती 8:20)। जंगली जानवरों और पक्षियों के घर होते हैं, जिनमें दिन ढलने पर वे लौट सकते हैं, परन्तु मसीह का कोई पक्का ठिकाना नहीं था।[8] सराय में उसके लिए कोई जगह नहीं थी (लूका 2:7), गिरासेनियों के देश में उसके लिए जगह नहीं थी (मरकुस 5:1-17), और नासरत में भी उसके लिए कोई जगह नहीं थी (लूका 4:16-31)। एल्फ्रेड प्लम्मर ने कहा है, ''यीशु के जीवन का आरम्भ बेगानी चरनी में और अन्त बेगानी कब्र में हुआ।''[9] पौलुस ने लिखा है, ''तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ'' (2 कुरिन्थियों 8:9)।[10]

यीशु शिकायत नहीं कर रहा था या वह रहम की भीख नहीं मांग रहा था क्योंकि उसने तो यह जीवन शैली अपनी इच्छा से चुनी थी।[11] न ही वह होने-वाले चेलों को निराश करने की कोशिश कर रहा था, बल्कि उसकी इच्छा उस आदमी को यह अहसास कराने की थी कि चेला बनकर उसे क्या-क्या सहना पड़ेगा। आवेगशील चेले के लिए प्रभु का संदेश था, पहले '' *खर्च जोड़ ले*।''[12]

यदि कोई जवान व्यक्ति डॉक्टर बनने का इच्छुक है तो हम उससे कहते हैं, ''विचार

तो बड़ा नेक है, पर पहले *खर्च जोड़ ले* । वर्षों के अध्ययन तथा इंटर्नशिप के लिए आवश्यक समर्पण की समझ आ जाने पर, यदि आप ऐसी प्रतिबद्धता को तैयार हैं, तो बड़ी अच्छी बात है।''''खर्च जोड़ ले!'' यदि आप डिग्री प्राप्त करना चाहते हैं यदि आप विश्व स्तर के एथलीट बनने की अभिलाषा रखते हैं, यदि आप विवाह करना चाहते हैं, या यदि आप और आपका जीवन साथी बच्चे को जन्म देने का निर्णय लेते हैं, तो यह एक अच्छी नसीहत है। अधिकतर, हम लोगों को पीछे हटने के लिए खर्च का हिसाब लगाने के लिए नहीं, बल्कि उनमें उनके प्रस्ताव को हर हाल में पूरा करने के लिए दृढ़ता से रहने के लिए जोश भरने के लिए कहते हैं।

''बोने वाले का दृष्टांत'' में (मत्ती 13:18), मिट्टी की एक किस्म की सतही भूमि थी। इस भूमि में, पौधा जमीन में से शीघ्र फूट निकला; परन्तु जब आसमान में सूरज चमका, तो यह जल्दी ही सूख गया (मत्ती 13:5, 6)। मसीह ने कहा कि यह उस आदमी का हाल दिखाता है, ''जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता है पर अपने में जड़ न रखने के कारण वह थोड़े ही दिन का है, और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो तुरन्त ठोकर खाता है'' (मत्ती 13:20, 21) परन्तु प्रभु यह नहीं चाहता था कि होने-वाले चेले का अन्त ऐसा हो।

डांवांडोल उम्मीदवार (लूका 9:59, 60; मत्ती 8:21, 22)

होने-वाले आरम्भिक चेले ने तुरन्त अपने आप को सेवा के लिए स्वेच्छा से दे दिया, परन्तु दूसरे को प्रोत्साहन की आवश्यकता थी।[13] मसीह ने उससे भी वही कहा, जो दूसरे कइयों से कहा था, ''मेरे पीछे हो ले'' (लूका 9:59क; देखें मत्ती 8:22क)।[14]

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं'' (लूका 9:59ख; देखें मत्ती 8:21)। यह विनती युक्तिसंगत लगती है। अपने पिता को गाड़ने की ज़िम्मेदारी पुत्र की ही होती है। उस ज़माने में, गाड़ने को दूसरे किसी भी कार्य से अधिक महत्व दिया जाता था, चाहे सबसे पवित्र कर्त्तव्य ही क्यों न हों।[15] यीशु ने स्वयं सिखाया था कि लोगों को अपने पिताओं का आदर करना चाहिए (मत्ती 15:4-6; देखें निर्गमन 20:12; इफिसियों 6:1-3)। निश्चित रूप से, किसी पिता के सही ढंग से गाड़े जाने को देखने में ''आदर'' शब्द भी सम्मिलित होगा।

इसलिए मसीह का उत्तर चौंकाने वाला लगता है: ''मरे हुओं को अपने मुर्दे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना'' (लूका 9:60; देखें मत्ती 8:22)। यीशु ने ''मरे हुओं'' शब्द का दो अर्थों में इस्तेमाल किया: ''*आत्मिक रूप से* मरे हुओं को[16] *शारीरिक रूप से* मुर्दों को गाड़ने दे।'' ऊपर से प्रभु के शब्द कठोर, सहानुभूति रहित और भावनाहीन लगते हैं। इनके पीछे क्या कारण हो सकता है? इन तथ्यों पर विचार करें:

(1) बाइबल के समय के देशों में यद्यपि गाड़ा जाना लगभग उसी समय (हो सके तो उसी दिन) हो जाता था,[17] पर इसके बाद के समारोह सप्ताह या अधिक समय तक चलते थे। हम इसका अर्थ जो भी निकालें, वह आदमी प्रभु की बुलाहट को स्वीकार करने में देरी

कर रहा था।

(2) यरूशलेम को जाते हुए, मसीह वहां से गुजर रहा था।[18] यदि वह व्यक्ति सचमुच उसके पीछे चलना चाहता था, तो उसे तुरन्त चलना चाहिए था, बाद में नहीं।[19]

(3) उस समय के रीति-रिवाजों पर विचार करें तो शायद वह आदमी अपने निर्णय को अनिश्चितकाल के लिए टाल रहा था। उसकी विनती का अर्थ आवश्यक नहीं कि यही हो कि उसका पिता कुछ समय पहले मरा था और उसके गाड़ने की रस्में निभाई जानी आवश्यक थीं। उसके शब्दों का अर्थ हो सकता है कि ''मुझे अभी परिवार की कुछ ज़िम्मेदारियां निभानी हैं। कुछ समय बाद, मेरे पिता की मृत्यु होने पर और ज़िम्मेदारियां पूरी कर लेने के बाद, मैं तेरे पीछे आ जाऊंगा।''[20] उस समाज में रहने वाले लोग ''मुझे पहले अपने पिता को गाड़ लेने दे'' शब्दों का अर्थ देने वाले कई उदाहरण देते हैं, जिनसे यह संकेत मिलता है कि बहुत समय बीत जाने के बाद, उस बोलने वाले ने इस प्रस्ताव पर विचार करना था।[21] टीकाकारों का मानना है कि बात ऐसी ही थी। वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि यदि उस व्यक्ति का पिता मर गया था और अभी गाड़ा नहीं गया था, तो वह आदमी सड़क के किनारे खड़ा नहीं होता, जहां से यीशु उसे कह सकता, ''मेरे पीछे हो ले।'' वह आदमी तो अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में व्यस्त होता।[22]

(4) याद रखें कि यीशु लोगों के मनों को जानता था। उस आदमी की बातें कितनी भी तर्कसंगत क्यों न लगती हों, मसीह ने उन्हें अपने पीछे चलने के लिए नहीं, बल्कि एक बहाने का स्पष्ट कारण माना।

उस व्यक्ति के बहाने का दुखदायी शब्द ''पहले'' है: ''हे प्रभु, मुझे *पहिले* जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं।'' परमेश्वर ने कहा था, ''तुम मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना'' (निर्गमन 20:3)। यीशु ने कहा था, ''पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो'' (मत्ती 6:33क)। मसीह ने लगातार इस बात पर ज़ोर दिया कि उसके पीछे चलने से किसी भी बात को अधिक प्राथमिकता नहीं दी जानी चाहिए, चाहे वह परिवार से प्रेम ही क्यों न हो (लूका 14:25-27)। उसने निष्ठा के पूरे हस्तान्तरण की मांग की!

मुझे नहीं मालूम कि उस आदमी के मन में क्या था, जब उसने कहा, ''मुझे पहले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं,'' परन्तु मैंने होने-वाले कई चेलों में उसी का मन देखा है। मैंने कई युवाओं को यह कहते सुना है, ''मुझे *पहले* अपनी जई बो लेने दो, फिर मैं यीशु के पीछे आऊंगा।'' मैंने काम करने वाले जवानों को कहते सुना है, ''*पहले* मुझे अपने पैरों पर खड़ा होकर परिवार के लिए प्रबन्ध कर लेने दो, फिर मैं निश्चिन्त होकर यीशु के पीछे आ सकूंगा।'' मैंने बूढ़े लोगों को यह कहते सुना है, ''सब ज़िम्मेदारियां पूरी *होते ही* मैं यीशु के पीछे हो लूंगा।'' कई बार तो ये लक्ष्य काम के होते थे, और कई बार बेकार; परन्तु हर मामले में दुख की बात यही थी कि वे *पहले* अर्थात मसीह से पहले थे।[23]

मुझे एक आदमी की याद आती है, जिसे लगता है कि मैंने बपतिस्मा लिया था, वह बड़ी क्षमता वाला एक जवान योग्य पिता था। पहले तो वह प्रभु के काम में बड़ी सरगर्मी से भाग लेता था। फिर उसने अपना काम शुरू कर दिया और रात-दिन मेहनत करने लगा।

वह घर में रात को देर से आता, और आराधना में आना उसने बहुत कम कर दिया। वह यह कहकर बहाना बनाता, ''पहले मैं अपना कारोबार सैट कर लूं। फिर मैं परमेश्वर को अपना समय भी दूंगा और धन भी।'' वह प्रभु से दूर और दूर होता गया; जहां तक मुझे पता है, वह कभी लौटकर नहीं आया।

डांवांडोल उम्मीदवार को यीशु का संदेश था कि *''उलझन पर विचार कर ले।''* या यूं कहें कि ''जब उलझन भरे कर्त्तव्यों में से किसी को चुनना हो, तो यदि तू मेरा चेला है, तो तुझे पहले वही करना चाहिए, जिसकी *मैंने* तुझे आज्ञा दी है।''

यीशु ने उसे क्या आज्ञा दी *थी*? ''मरे हुओं को अपने मुर्दे गाड़ने दे, *पर तू* जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना'' (लूका 9:60)। अन्य शब्दों में, ''जीवन के सामान्य कार्यों, जैसे मुर्दों को गाड़ने का काम करने वाला कोई न कोई अवश्य होगा, पर मैं तुझे एक विशेष काम देता हूं: हर जगह जाकर इस बात की घोषणा कर कि राज्य आने वाला है![24] यह अधिक आवश्यक है, सो मेरे पीछे *अभी* चल।''

अनिश्चित उम्मीदवार (लूका 9:61, 62)

दूसरे आदमी की तरह होने-वाले तीसरे उम्मीदवार ने पहले कुछ और करने को कहा: ''एक और ने भी कहा; हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूंगा; पर पहिले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो आऊं'' (आयत 61)। पहली विनती की तरह, उसकी प्रार्थना तर्कहीन नहीं लगी।[25] परन्तु याद रखें कि पूर्वी देशों में, विदाई समारोह कई-कई दिन, सप्ताह या महीने तक चल सकते थे। यीशु के पीछे चलने के लिए, उसे इसे *तभी* करना आवश्यक था; प्रभु ने अगले दिन वहां नहीं होना था, जो एक सप्ताह या महीने बाद से कहीं कम समय था।

इस सम्भावना पर भी विचार करें कि यदि वह आदमी घर में अलविदा कहने के लिए जाता, तो उसके परिवार वाले उससे मसीह के चेले के अनिश्चित जीवन की बातें करने लगते।[26] किसी अन्य विश्वास में पले-बढ़े लोगों को सिखाने वाले प्रचारक कहते हैं कि अपने बच्चों को मसीहियत को स्वीकार न करने देने के लिए उनके माता-पिता किसी भी हद तक जा सकते हैं। एक अन्तिम उपाय के रूप में, वे कहते हैं, ''ठीक है। यदि तू ने बपतिस्मा लेना ही है, तो जो तेरे मन में आए कर। पर हम तुझ से एक बार पूछते हैं: ऐसा करने से पहले, आखिरी बार आकर हम से मिल तो ले। जो कुछ हमने अब तक तेरे लिए किया है, उसके सामने तो हमारी यह इच्छा बहुत छोटी है।'' प्रचारक बताते हैं कि कुछ बच्चे मन को लगने वाली इस बात को मान लेते हैं, और घर चले जाने वालों में से, केवल कुछ ही मसीही बनने के लिए वापस आते हैं।[27]

यीशु इस व्यक्ति को वैसे ही उत्तर दे सकता था, जैसे उसने दूसरे व्यक्ति को दिया था कि वह उससे कहता कि देर न कर। परन्तु उसके मन में देखकर उसने पाया कि उसे अपने पुराने जीवन से इतना लगाव था कि उससे छूट नहीं सकता था। इस अनिश्चित उम्मीदवार को उसका संदेश था, *''परिणामों पर विचार कर।''* पर ''यीशु ने उस से कहा जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं'' (आयत 62)।

जिस हल की बात यहां की गई है, वह एक छोटा, हल्का हल होता था, जिसे बायें हाथ से पकड़कर[28] दायें हाथ से बैल को जोता जाता था। आपने कभी हल जोता हो या नहीं परन्तु आप यह जानते होंगे कि पीछे मुड़कर देखने वाला हल नहीं चला सकता। एक भयंकर दिन का ध्यान आता है। जब मैं छोटा लड़का था, तो मुझे किसी ने अपने खेत में हल चलाने के लिए मजदूरी पर रखा। मुझे कुछ पता नहीं था कि मैं क्या कर रहा हूं। हल रेखाएं इतनी टेढ़ी-मेढ़ी बन गईं कि पूरा खेत ही फिर से जोतना पड़ा था!

पीछे मुड़कर देखना केवल हल चलाने के लिए ही नहीं, बल्कि प्रभु के पीछे चलने वाले के लिए भी खतरनाक है।[29] होने-वाला यह चेला स्पष्टतया अपने परिवार और मित्रों की ओर पीछे को देख रहा था, परन्तु यह मोह पिछली किसी भी बात से हो सकता है, चाहे यह मसीही सिद्धान्तों की अनदेखी करके पाई गई पिछली सफलता ही क्यों न हो। मसीह के अनुसार, पाप के पुराने जीवन की ओर देखते रहने वाले लोग अपने आप को राज्य में प्रवेश के अयोग्य बना लेते हैं।

होने-वाले चेले अब

बाइबल की इन आयतों से हम क्या निष्कर्ष निकालें? परिवार तथा मित्रों सहित अपने पुराने जीवनों से सब प्रकार के सम्बन्ध तोड़ लेने की कठोर नीति को उचित ठहराने के लिए सम्प्रदायों में लूका 9:57-62 जैसे पदों का इस्तेमाल किया जाता है, परन्तु यीशु ने कभी यह नहीं सिखाया कि पारिवारिक ज़िम्मेदारियां पूरा करना, मित्र बनाना या किसी के जनाज़े पर जाना गलत है। इसके बिल्कुल विपरीत, उसने सिखाया कि हमें अपने माता-पिता की देखभाल करनी चाहिए (मत्ती 15:4-6; 19:19), उसके मित्र थे (लूका 12:4; यूहन्ना 15:15), और वह स्वयं लोगों के साथ एक-दो जनाज़ों पर भी गया (मत्ती 9:23-25; लूका 7:12-15)।

लूका 9:57-62 के संदेश को एक शब्द से जिसे हमने इस प्रवचन में कई बार इस्तेमाल किया है, संक्षिप्त कर सकते हैं: प्रतिबद्धता। मसीह के चेले होने के लिए, हमें पूरी तरह से उसके और उसके काम के प्रति प्रतिबद्ध होना आवश्यक है।

आवेगपूर्ण उम्मीदवार

आवेगपूर्ण उम्मीदवारों से प्रभु कहता है,[30] ''वह प्रतिबद्धता करने से पहले समझ लो कि उसके साथ क्या आवश्यक है।''

पहले एक जगह मसीह ने कहा था, ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इनकार करे और प्रतिदिन *अपना क्रूस उठाए* हुए मेरे पीछे हो ले'' (लूका 9:23)। पलिश्तीन में रहने वाले अधिकतर लोगों ने किसी न किसी को क्रूस उठाए देखा होगा। सब को मालूम था कि यदि आप क्रूस उठाते हैं, तो आप मरने वाले हैं (देखें यूहन्ना 19:17) क्योंकि क्रूस उठाकर ले जाने वाला वापस नहीं आता था। ''मेरे पीछे हो ले'' की चुनौती देकर प्रभु अपने आप का इनकार करने के लिए ही कह रहा था।

हम में से जो लोग प्रचार करते और सिखाते हैं, वे यदि यह प्रभाव छोड़ते हैं कि यीशु के पीछे चलना आसान है तो हम अपने छात्रों की सेवा नहीं कर रहे हैं। मसीह ने अपने चेलों को बताया था कि ''संसार में तुम्हें क्लेश होता है'' (यूहन्ना 16:33ख)। पौलुस ने लिखा है, ''जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे'' (2 तीमुथियुस 3:12)। एक पुराने गीत का अनुवाद है, ''यदि तुम क्रूस नहीं उठाते, तो तुम मुकुट नहीं पहन सकते।'' सच्ची बात तो यह है कि यीशु के पीछे चलने के लिए कुछ न कुछ तो खोना ही पड़ेगा!

क्या यीशु चाहता है कि आप उसके चेले बनें? बेशक! इसके साथ ही, उसके चेले बनने से पहले, प्रभु चाहता है कि आप उस प्रतिबद्धता को अच्छी तरह समझ लें।

डांवांडोल उम्मीदवार

डांवांडोल उम्मीदवारों से मसीह कहता है, ''यह प्रतिबद्धता करते समय, समझ लो कि इसका अर्थ है कि हर बात से पहले, चाहे वह परिवार और मित्र ही क्यों न हों, *मैं* आता हूं।'' ''जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं'' (मत्ती 10:37)।

हमारी प्राथमिक आवश्यकताओं में घर, परिवार और मित्र आते हैं। अपने जीवन यीशु को देने से पहले, वह हम में से हर एक से चाहेगा कि हम पूछ लें, ''पर यदि प्रभु के पीछे चलने के लिए मुझे इन सब को छोड़ना पड़े? तो क्या मैं ऐसा करने के लिए तैयार होऊंगा?'' मन को टटोलने वाले ऐसे कई और प्रश्न हो सकते हैं: ''यदि मसीह के पीछे चलने का अर्थ यह हो कि मेरी आमदनी बहुत कम है ... कि लोग मेरे समर्पण को नहीं समझेंगे ... कि, हो सकता है कि मैं सताया भी जाऊं? क्या मैं फिर भी उसके पीछे चलूंगा?'' माइकल विलकोक ने लिखा है, ''जब दो मार्गों में से एक को चुनना आवश्यक हो, तो हम किसे मानेंगे? आराम या रीतियां, परम्परा या मसीह?''[31]

पौलुस ने लिखा है कि मसीह ''देह, अर्थात कलीसिया का सिर है; ... कि सब बातों में वही *प्रधान* ठहरे'' (कुलुस्सियों 1:18)। कुछ लोगों के लिए, यह तथ्य कि प्रभु को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, एक याद दिलाने वाली बात है, जबकि दूसरों के लिए, यह एक प्रकाशन है।

अनिश्चित उम्मीदवार

अब तक के यीशु के संदेश महत्वपूर्ण हैं: ''विचार करो कि पीछे चलना मुझे कितना महंगा पड़ेगा और समझ लो कि इसके साथ क्या-क्या सहना पड़ेगा।'' परन्तु इन दो चेतावनियों को सुनकर, मैं होने-वाले एक चेले के यह कहने की कल्पना कर सकता हूं, ''यदि मसीह के पीछे चलना इतना कठिन है, तो सचमुच मुझे उसके पीछे चलने में कोई दिलचस्पी नहीं है!'' इसलिए अनिश्चित उम्मीदवारों के लिए उसकी बात, ''मुझ से पीछे मुड़कर जाने के परिणामों पर विचार कर ले: तू परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं ठहरेगा!''

संतुलन बनाने की आवश्यकता है।

आप में से अधिकतर, जो पढ़ रहे हैं, जानते हैं कि, इससे थोड़ा पहले, यीशु ने मसीहा के राज्य को उस कलीसिया के रूप में बताया था, जो उसने बनानी थी (मत्ती 16:18, 19; देखें कुलुस्सियों 1:13)। आप यह भी जानते होंगे कि स्वर्ग को प्राय: परमेश्वर के राज्य के रूप में कहा जाता है (1 कुरिन्थियों 15:50; 2 तीमुथियुस 4:18; 2 पतरस 1:11)। इसलिए ''परमेश्वर के राज्य के योग्य ... नहीं'' पढ़ने पर हम सोचते हैं कि ''हां, यदि कोई प्रभु के पीछे चलने को तैयार नहीं है, तो वह कलीसिया का विश्वासी सदस्य नहीं बन सकता और अन्त में परिणाम यह होगा कि वह स्वर्ग में नहीं जाएगा।'' इस वाक्य की हर बात सच है, परन्तु इससे पहली सदी के श्रोताओं पर मसीह के शब्दों का भावनात्मक असर पता नहीं चलता।

मसीहा के राज्य के यीशु के सुनने वालों के मन में होने वाले अर्थ पर ध्यान करें। वे सदियों से उस राज्य की प्रतीक्षा कर रहे थे, उसके आने की प्रार्थना कर रहे थे (देखें मरकुस 11:10; 15:43)। प्रभु आकर यह प्रचार कर रहा था, ''स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (मत्ती 3:2; 4:17)। अपने अनुयायियों को उसने बताया था कि ''जो यहां खड़े हैं, उन में से कोई-कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे'' (मरकुस 9:1)। उस राज्य की स्थापना का समय निकट आने पर उत्तेजना बढ़ रही थी।[32] राज्य के आने पर इसके लिए अयोग्य होना हर सम्भावित विनाश से खतरनाक था! परन्तु मसीह ने ''हल पर हाथ रखकर'' पीछे मुड़कर देखने वाले के भविष्य की घोषणा की।

नया नियम राज्य/कलीसिया की तुलना उस बेशकीमती खज़ाने से करता है, जिसके लिए कोई भी बलिदान कम है (मत्ती 13:44-46)। राज्य/कलीसिया का संदेश ''शुभ समाचार'' है (मत्ती 24:14; प्रेरितों 8:12)। राज्य/कलीसिया में हमारी संगति मसीह के साथ होती है (मत्ती 26:29)। राज्य/कलीसिया में, हमें धार्मिकता, शान्ति और आनन्द मिलता है (रोमियों 14:17)। मुझे आशा है कि हमारा भी यही विश्वास है कि यीशु के राज्य के अयोग्य होने का अर्थ सबसे विनाशकारी है।

प्रभु के पीछे चलने के लिए, हमारे मन उसी पर लगे रहने आवश्यक हैं। ''वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें। और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले *यीशु की ओर ताकते रहें*'' (इब्रानियों 12:1ग, 2क)। पौलुस ने लिखा है, ''परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है'' (फिलिप्पियों 3:13ख, 14)।[33] प्रभु दो-चित्ते मनों को ग्रहण नहीं करेगा (होशे 10:2; प्रकाशितवाक्य 3:16)।

सारांश

होने-वाले तीन चेलों ने यीशु की चुनौतियों को कैसे स्वीकार किया? क्या वे सब कुछ

छोड़कर उसके पीछे चल दिए या उस धनी जवान हाकिम की तरह कुड़कुड़ाते हुए चले गए (मत्ती 19:22)? हमें नहीं बताया गया। यदि आपको कहा जाए कि:

... मसीह के पीछे चलने पर केवल कठिनाइयां ही आएंगी?

... तुम्हारे पिता को कोई और गाड़ देगा?

... तुम अपने परिवार को अलविदा भी नहीं कह सकते?

... यदि तुम पीछे मुड़कर जाओगे, तो तुम प्रभु के राज्य के योग्य नहीं ठहरोगे?

तो *आप* की प्रतिक्रिया क्या होगी?

इससे भी महत्वपूर्ण, उसके निमन्त्रण को स्वीकार करने के लिए *आज* आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी? वह आज भी कहता है, ''मेरे पीछे हो ले,'' परन्तु उसकी शर्तें कम नहीं हुई हैं: ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इनकार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले'' (लूका 9:23)। यदि आप अपना जीवन, अपना सब कुछ प्रभु को देना चाहते हैं, तो *आज ही* दे दें।[34]

नोट्स

इस प्रवचन का एक और शीर्षक ''कोई अच्छी छपाई नहीं'' हो सकता है और सम्भावित शीर्षक ''चेले होने की कीमत'' और ''चेला होने की शर्तें'' हो सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]यदि आपका कोई ऐसा अनुभव हो, तो आप उसे बता सकते हैं। हर हाल में, आरम्भ स्थानीय उदाहरण देकर ही करें। [2]क्योंकि सुसमाचार के वृत्तांतों के लेखकों के लिए कालक्रम का इतना महत्व नहीं था, इसलिए दोनों घटनाएं एक ही हो सकती हैं। परन्तु दोनों वृत्तांतों का दृश्य एक जैसा नहीं है, सो वे अलग-अलग समयों पर हुई हो सकती हैं। यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि एक से अधिक अवसरों पर, यीशु के पास होने-वाले चेले आए, जिन्होंने ऐसी ही बात की थी और हर बार उसने एक ही तरह का जवाब दिया था। [3]इस पद की तुलना यूहन्ना 13:37 और लूका 22:33 में पतरस के अवश्य माननीय वाक्यों से करें। [4]जहां यीशु घूमता और लोगों को शिक्षा देता था वहां पक्षियों की तरह, लोमड़ियां काफ़ी होती थीं (न्यायियों 15:4; नहेमायाह 4:3; भजन संहिता 63:10; श्रेष्ठगीत 2:15; विलापगीत 5:18; यहेजकेल 13:4; मत्ती 6:26; 13:4, 32; लूका 13:32)। [5]यूनानी शब्द के अनुवाद ''बसेरे'' का मूल अर्थ ''शिविर'' है। इस शब्द में केवल घोंसले ही नहीं बल्कि रैन बसेरे भी आ जाते हैं। [6]संदर्भ में, ''मनुष्य का पुत्र'' स्वयं यीशु को कहा गया है। [7] ''सिर धरने की भी जगह नहीं'' यह कहने का कि ''घर नहीं'' प्रसिद्ध ढंग था। अंग्रेज़ी के एक अनुवाद द कॉटन पैच में एक अमेरिकी अभिव्यक्ति ''हैट लटकाने के लिए कोई जगह नहीं'' का इस्तेमाल हुआ है, जिसका अर्थ भी यही है। [8]समय समय पर यीशु के पास ऐसे घर थे जिनमें वह रात को सो सकता था-जैसे कफ़रनहूम में पतरस का घर और बैतनिय्याह में मरियम और मारथा का घर-परन्तु उसने अपना पक्का निवास कहीं नहीं बनाया था। अधिकांश समय वह और उसके चेले इधर-उधर घूमते रहते थे। [9]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* संशो. संस्क. अंक 1 (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 311 में उद्धृत। [10]टीवी प्रचारकों के ''धन और स्वास्थ्य'' से कितना अलग है जो अपने विशाल भवनों, सम्पत्तियों, और अन्य वस्तुओं को परमेश्वर द्वारा उनकी सेवकाई के स्वीकार किए जाने का प्रमाण मानते हैं! होने-वाले प्रचारकों तथा मिशनरियों के लिए इसमें संदेश है: काम

को *पेशे* के रूप में न देखें, जिससे आपको धन और सम्पत्ति का प्रतिफल मिलेगा। बल्कि अपने आप को *सेवकाई* के लिए समर्पित कर दें और फिर जीवन की आवश्यकताओं को (विलासिताओं को नहीं) पूरा करने के लिए प्रभु पर भरोसा रखें (मत्ती 6:33)।

[11]उसने स्वर्ग स्वेच्छा से छोड़ा था, और नासरत वाला अपना घर भी स्वेच्छा से ही छोड़ा था। [12]एक और अवसर के लिए, जब यीशु ने होने-वाले चेलों को ''खर्च जोड़'' लेने के लिए कहा, देखें लूका 14:27-30. [13]अलग-अलग एकरूपताओं का इस्तेमाल किया जा सकता है: यीशु ने पहले को ''रुक जाने'' पर दूसरे को ''चलने'' को कहा; यीशु ने पहले को ब्रेक लगाने और दूसरे को रेस दबाने को कहा। अपने स्थानीय लोगों को मसझ आ सकने वाली एकरूपता का इस्तेमाल करें। जहां पहला अधेड़ उम्र का था, वहीं दूसरा अवयस्क। [14]इसके थोड़ी देर बाद, यीशु ने यहूदिया के दौरे पर सत्तर लोगों को भेजा (लूका 10:1)। शायद मसीह इस काम के लिए लोगों की भर्ती कर रहा था (देखें लूका 10:2; लूका 10:11ख की तुलना लूका 9:60ख से करें)। लोगों से ''मेरे पीछे हो ले'' कहकर, मसीह अक्सर उन्हें पूर्णकालिक सेवा के लिए बुलाता था। [15]रब्बियों के अनुसार माता-पिता को गाड़ना धार्मिक सेवा या व्यवस्था का अध्ययन करने से बढ़कर था। एक पुत्र का अपने पिता को गाड़ने के लिए धार्मिक, सामाजिक और पारिवारिक दायित्व था। प्रियजनों के गाड़ने के महत्व पर पुराने नियम के पदों के नमूने के लिए, देखें उत्पत्ति 23:9; 25:9; 35:29; 49:28-50:3; 50:5, 13, 14, 26; यहोशू 24:29, 30. [16]देखें इफिसियों 2:1; 1 तीमुथियुस 5:6; 1 यूहन्ना 3:14. [17]देखें मत्ती 9:18, 23; यूहन्ना 11:1, 14, 17; प्रेरितों 5:5, 6, 10. [18]मत्ती के वृत्तांत में भी यीशु को गलील की झील के पूर्वी ओर जाते हुए दिखाया गया है (मत्ती 8:18, 23, 28)। [19]जहां मैं रहता हूं वहां प्रसिद्ध वाक्य रचना यह होगी ''उस आदमी के लिए यह सुनहरा अवसर था।'' [20]कुछ लोगों का विचार है कि उस जवान के शब्दों का अर्थ यह भी हो सकता है: ''सम्पत्ति का हिसाब हो जाने और मुझे मेरा हिस्सा मिल जाए, *तब* मैं तेरे पीछे हो लूंगा। आखिर, चेला होने का काम असफल होने पर मुझे आर्थिक सुरक्षा भी तो चाहिए है।''

[21]एक मिशनरी ने तुर्की के एक जवान को नसीहत देने की बात बताई। आदमी ने उत्तर दिया, ''सबसे पहले मैं अपने पिता को दफ़ना आऊं।'' उस मिशनरी के उसके साथ सहानूभुति दिखाने पर, जवान ने कहा कि उसका पिता मरा नहीं है, बल्कि उसके कहने का अर्थ था कि मिशनरी की सलाह मानने से पहले वह अपनी सारी पारिवारिक ज़िम्मेदारियां पूरी कर ले। एक अंग्रेज़ अधिकारी ने एक जवान अरब को प्रस्तुत की गई छात्रवृत्ति के बारे में बताया। उसने कहा, ''मैं इसे अपने पिता को दफ़नाने के बाद ले लूंगा।'' उस समय, उस जवान के पिता की आयु चालीस वर्ष के लगभग थी और अच्छी सेहत थी। एक वक्ता ने कहा कि आज भी खाड़ी देशों में, जब कोई किसी दूसरे देश में जाने की इच्छा करता है, तो उससे पूछा जाता है, ''क्या तुम पहले अपने पिता को दफ़नाओगे नहीं?'' इसका अर्थ है, ''क्या तुम पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को पूरा करने तक रुकोगे नहीं?'' [22]याद रखें कि सम्भव होने पर, दफ़नाया जाना मृत्यु के दिन ही हो जाता था। [23]इस भाग को काफ़ी विस्तार दिया जा सकता है। मैं जब ऑस्ट्रेलिया में कुछ मिशनरियों के साथ काम कर रहा था तो अक्सर हमें बताया जाता था, ''हम आपकी सहायता के लिए ऑस्ट्रेलिया में आ जाएंगे, पर *पहले* हम ... कर लें।'' यह सुनकर हमें पता होता था कि बोलने वाले कभी नहीं आएंगे। ऑस्ट्रेलिया में हमारा एक स्कूल ऑफ़ प्रीचिंग था और भावी छात्र अक्सर हमें बताते थे, ''हम स्कूल में आएंगे, पर *पहले* हम ...।'' जब हम यह सुनते, तो हमें पता होता था कि वे जवान कभी लौटकर नहीं आएंगे। इसे अपने इलाके में उन बहानों पर लागू करें, जो *आप* सुनते रहते हैं। [24]इस पाठ में टिप्पणी 14 देखें। [25]ऐसी ही विनती ऐलिशा ने की थी जब एलिय्याह ने उसे बुलाया था, और उसने उसकी विनती मान ली थी (1 राजा 19:19-21)। [26]टिप्पणी 23 देखें। बहुत सीधा सा कारण कि होने-वाले मिशनरी ऑस्ट्रेलिया में इसलिए नहीं आए थे क्योंकि उनके माता-पिता ने इसके बारे में बात की थी: ''मेरे नाती-पोतों को वहां मत ले जाना जहां मैं कभी उनका मुंह न देख पाऊं!'' [27]देखें स्टीफन एफ़. ओलफोर्ड, *कमिटड टू क्राइस्ट एण्ड हिज़ चर्च* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1991), 37-38. [28]ध्यान दें कि लूका 9:62 में ''हाथ'' एक वचन में है। [29]लूत की पत्नी के लिए पीछे देखना विनाशकारी था (उत्पत्ति 19:26)। [30]प्रासंगिकता के इस भाग में, मैं यीशु के संदेश को उम्मीदवारों के प्रत्येक वर्ग के लिए संक्षिप्त करूंगा। ये शब्द ज्यों के त्यों नहीं हैं। आप हर मामले में ''या यूं कहें'' शब्द लगा सकते हैं।

[31]माइकल विलकोक, द *मैसेज ऑफ़ लूक: द सेवियर ऑफ़ द वर्ल्ड* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर ग्रोव, इलिनोयस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1979), 119. [32]कलीसिया/राज्य की स्थापना मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने तथा पुनरुत्थान के बाद पहले पिन्तेकुस्त के दिन हुई थी (प्रेरितों 2)। [33]''पीछे देखना'' की मनाही का अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी अतीत की यादों को पूरी तरह से मिटा (सकते हैं) दें। पौलुस को अपना अतीत याद था (फिलिप्पियों 3:5, 6), परन्तु वह उस पर निर्भर नहीं था। उसका ध्यान तो अब मसीह और भविष्य पर था। इस सम्बन्ध में, यह ध्यान दिया जा सकता है कि मूल भाषा में, लूका 9:62 में ''पीछे देखना'' सरसरी तौर पर देखना नहीं बल्कि लगातार कार्य करना है। [34]आपको चाहिए कि अपने सुनने वाले को बताएं कि यीशु का चेला कैसे बनना है (यूहन्ना 3:16; लूका 13:3; मत्ती 10:32, 33; मरकुस 16:15, 16) और यदि वे अपनी वचनबद्धता के प्रति विश्वास से फिर जाएं तो कैसे वापस आना है (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9)।